

10.5.18

पत्राज यह पत्राठ वाद पत्राठ के साथ
 पेशी में ली गई वादी का वाद विद्वां विधा
 जा लुका है जो निरस्त कर दिशा
 राख है फलतः यह ^{पत्राठ} ~~पत्राठ~~ वा
 तदापुस्तक खारिज किया जाता है
 तदापुस्तक निरस्त होकर वाद न करे
 वरु अतिमेरुवामय का ली जावे

राजपाल
 १०/५/१८
Deveshwar

राज
 उपस्थित अधिकारी
 काठकासम (अदालत)